﴾"अहले सुन्नत का दावा करने वाले I बरेलवी, II देवबंदी, III सलफी (अहले हदीस) के बा-शउर अवाम उन्नास" के लिए दावत-ए-फ़िक्र﴿

1

12 ربیع الاول 1432ھ

بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله واصحابه اجمعين الى يوم الدين

Research Paper 6

16 February 2011

कब्रों से फ़ैज़ के अक़ीदे का तहक़ीक़ी जाइज़ा

"क़ुरआन-ए-हकीम" और इमाम-उल-अंबिया वल मुरसलीन ﷺ की "सहीह अहादीस" की तालीमात की रौशनी में"

---

1 (الله ﷻ हम से रोज़ाना 5 वक़्त की नमाज़ो की तमाम रकअतों में यह अज़ीम वादा लेता है) O إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "ऐ अल्लाह ﷻ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और ऐ अल्लाह! हम तुझ ही से ग़ायब में मदद मांगते हैं (यानी तुझ ही से दुआ मांगते हैं।)" {सूरतुल फ़तिहा : आयत 4} [سورة الفاتحة : آیت نمبر 4]

2 O وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "ऐ महबूब ﷺ! और जब आप ﷺ से मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक़ पूछें, (तो आप ﷺ फ़रमाओ) यक़ीनन मैं बिल्कुल नज़दीक हूँ, क़ुबूल करता हूँ पुकारने वाले की पुकार (दुआ) को, जब वह मुझे पुकारता है, पस उन्हे भी चाहिये कि मेरा हुक्म माने (मेरी इबादत करें और दुआ भी मुझ ही से मांगें) और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह कामयाबी पा सकें।" {सूरह बक़रह : आयत 186} [سورة البقرة : آیت نمبر 186]

3 O أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(ज़रा बताओ तो) कौन क़ुबूल करता है बेक़रार की फ़रियाद को जब वह उस (अल्लाह) को पुकारे, और दूर कर देता है तक्लीफ़ को, और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाता है (अगलों का) क्या अल्लाह के साथ और कोई माबूद भी है? (मगर) तुम (इस हक़ीक़त पर) कम ही गौरो-फिक्र करते हो" {सूरह नमल: आयत 62} [سورة النمل : آیت نمبر 62]

4 **तर्जुमा सहीह हदीस:** इमाम उल अंबिया वल मुरसलीन ﷺ ने सय्यिदना इब्ने अब्बास رضی الله عنه को नसीहत फ़रमाई "ऐ बेटे! तू अल्लाह के अहकाम की हिफ़ाज़त कर अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। अल्लाह के हुक़ूक़ का ख़्याल रख तू उसे अपने सामने पाएगा। और जब तू सवाल करे तो सिर्फ़ अल्लाह से सवाल करना। और जब तू मदद तलब करे तो सिर्फ़ अल्लाह से मदद तलब करना और जान ले कि अगर पूरी उम्मत भी जमा होकर तुझे कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो अल्लाह चाहे और अगर पूरी उम्मत जमा होकर तुझे कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो अल्लाह चाहे। क़लम उठ गऐ और सहीफ़े ख़ुश्क हो गए। {जामे तिर्मिज़ी "किताबुल सिफ़तुल क़यामह" हदीस न॰ 2516}
[جامع ترمذی "کتاب صفة القيامة" حدیث نمبر 2516]

नताइज: मन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी) आयात व सहीह हदीस पढ़ने के बाद "दुआ (ग़ायब में मदद के लिये पुकारने) से मुताल्लिक़ दो अहम तरीन नताइज निकलते हैं।

I दुआ "इबादत" की एक आला क़िस्म है और अल्लाह के साथ ख़ास है।

II अल्लाह के अलावा किसी और से "दुआ" मांगना गोया उसे "माबूद" बना लेने के जैसा है। लिहाज़ा यह अमल ख़ालिसतन शिर्क और नाक़ाबिले माफ़ी गुनाह है (नऊज़ु बिल्लाह ﷻ) ﴾ نَعُوْذُ بِاللّٰه ﷻ ﴿

5 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہ रिवायत करती हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ मर्ज़-ए-वफ़ात में मुब्तला थे तो बार-बार अपनी चादर मुबारक को अपने चेहरे मुबारक पे डालते और जब चादर की वजह से घबराहट शुरु हो जाती तो उसे अपने चेहरे मुबारक से हटा देते। और इसी हालत में फ़रमाते जाते थे :

﴿لَعَنَ اللّٰهُ الْيَهُوْدَ وَالنَّصَارٰى ، اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ أَنْبِيَآئِهِمْ مَسَاجِدَ﴾

तर्जुमा: अल्लाह ﷻ की लानत हो यहूदियों और नस्रानियों (ईसाइयों) पर कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया था। सय्यिदा आयशा फ़रमाती हैं “अगर यह ख़ौफ़ ना होता कि रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र पर लोग सज्दे शुरु कर देंगे। तो आप ﷺ की क़ब्रे मुबारक को (ज़ाइरीन की ज़ियारत के लिये) खुला छोड़ दिया जाता मगर आप ﷺ को यही ख़ौफ़ था जिसकी वजह से रसूलुल्लाह ﷺ इस अमल से बचने की तल्क़ीन कर रहे थे।”

{सहीह बुख़ारी “किताबुल जनाइज़” हदीस न० 1390, सहीह मुस्लिम “किताबुल मसाजिद” हदीस न० 1183}

[صحیح بُخاری ” کتابُ ا لجنائز“ حدیث نمبر 1390 ، صحیح مُسلم ” کتابُ ا لمساجد“ حدیث نمبر 1183]

6 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہ का बयान है कि उम्महातुल मौमिनीन सय्यिदा उम्मेसलमा رضی اللہ عنہ और उम्मेहबीबा رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने मरज़े-वफ़ात में एक गिरजे का ज़िक्र किया जो उन्होंने सरज़मीन-ए-हब्शा में देखा था और उसे “मारिया” कहा जाता था, और उन्होंने उस गिरजे में लटकी हुई कुछ तस्वीर का ज़िक्र भी रसूलुल्लाह ﷺ के सामने किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया “यह लोग ऐसे थे कि जब उनमें से कोई नेक आदमी मर जाता तो वे उसकी क़ब्र पर मस्जिद बना लेते और फिर उसमें उसकी तस्वीरें लटका देते, क़यामत के दिन यह लोग अल्लाह के नज़्दीक बदतरीन मख़्लूक़ शुमार होंगे।” {सहीह बुख़ारी “किताबुल जनाइज़” हदीस न०1341, सहीह मुस्लिम “किताबुल मसाजिद” हदीस1180}

[صحیح بُخاری ” کتاب ا ُلجنائز“ حدیث نمبر 1341 ، صحیح مُسلم ” کتابُ ا لمساجد“ حدیث نمبر 1180]

7 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं “सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब के ज़माने में जब लोग कहतसाली का शिकार हो जाते तो सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के वसीले से बारिश की दुआ करते और यूँ अर्ज़ करते “ऐ अल्लाह बेशक पहले हम अपने नबी ﷺ को तेरी बारगाह में वसीले के तौर पर पेश करते थे और उनकी दुआ से तू हम पर बारिश बरसा दिया करता था। आप ﷺ के बाद अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर लेकर आये हैं। पस उनकी दुआ से हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा। (रावी कहते हैं) यूँ उन पर बारिश बरस पड़ती। {सहीह बुख़ारी “ किताबुल इस्तिस्क़ा” हदीस 1010}

[صحیح بُخاری ” کتابُ الا ستسقاء “ حدیث نمبر 1010]

नताइज: I सय्यिदिना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ की आलातरीन “बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी” के बारे में जानते हुए भी आप ﷺ की कब्र मुबारक पर जाकर दुआ नही की क्योंकि अल्लाह के अलावा किसी और हस्ती से दुआ करना (गैब में मदद मांगना) ख़ालिसतन **शिर्क** और नाक़ाबिले माफ़ी गुनाह है। II सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र मुबारक पर जाकर आप ﷺ से वसीला के तौर पर दुआ नहीं करवाई बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ के चचा को वसीला के तौर पर लाकर उनसे दुआ करवाई। और यूँ उम्मते मुहम्मदिया ﷺ को यह अक़ीदा समझा दिया कि “सहीह वसीला शख़्सी” किसी की क़ब्र मुबारक पर जा कर उनसे मांगना या उनसे दुआ करवाना हरगिज़ नहीं है, बल्कि “दुनिया में मौजूद” नेक जिन्दा आदमी से दुआ करवाना है और इस अक़ीदे पर उम्मत का इज्मा है। (अल्हम्दु लिल्लाह ﷻ)

क़ब्रों से फैज़ का अकीदा रखने वाले उलमा के हवालाजात

नोट: कुरआन व सुन्नत के वाज़ेह दलाईल के बरअक्स इंडिया और पाकिस्तान के मशहूर उलेमा और बुज़ुर्गों की खुद साख्ता अक़ाइद व नज़रियात मुलाहीज़ा फ़रमाइए:

1 उलेमा का अक़ीदा "अब्रहा मशाइख़ की रुहानियत से इस्तफ़ादा और उनके सीनों और क़ब्रों से बातिनी फ़ुयूज़ हासिल करना तो बेशक सहीह है मगर उस तरीके से जो उसके अहल और ख़्वास को मालूम है ना उस तर्ज़ से जो अवाम में राइज है।" (देओबंदी बुज़ुर्ग: मौलाना खलील अहमद सहारनपुरी साहब "अल्मुहन्नद अलल मुफन्नद"(जवाब न०11)सफ़्हा न०40)(मक्तबा अल इल्मि लाहौर)

[دیوبندی بزرگ : مولانا خلیل احمد سہارنپوری صاحب " **المهند على المفند** " (جواب نمبر 11) صفحہ نمبر 40] ﴿ مکتبۃ العلم لاہور ﴾

2 उलेमा का अक़ीदा "क़ब्र का तवाफ़-ए-ताज़ीमी मना है और अगर बरकत लेने के लिये गिर्द ए मज़ार फिरा तो कोई हर्ज नहीं। मगर अवाम मना किये जाएं बल्कि अवाम के सामने किया भी ना जाए कि कुछ का कुछ समझेंगे।"
{बरेल्वी बुज़ुर्ग: मौलाना अहमद अली कादरी रिज़वी साहब "बहारे शरियत" (हिस्सा 4, क़ब्र व दफ़न का बयान) सफ़्हा 314} (शब्बीर ब्रदेर्स लाहौर)

[بریلوی بزرگ : مولانا امجد علی قادری رضوی صاحب " **بہار شریعت** " (حصہ چہارم، قبر و دفن کا بیان) صفحہ نمبر 314] ﴿ شبیر برادرز لاہور ﴾

3 उलेमा का अक़ीदा मौलाना सय्यिद मनाज़िर हसन गिलानी साहब मौलाना कासिम नानोत्वी साहब "बानी दारुल-उलूम देओबंद" के मुताल्लिक मौलाना मंसूर अली खान साहब से नक़ल करते है: "मौलाना क़ासिम नानोत्वी साहब अगर अकेले किसी मज़ार (बुर्ज़ुग की क़ब्र) पर जाते, और कोई दूसरा शख़्स वहाँ मौजूद नहीं होता, तो आवाज़ से अर्ज़ करते "आप मेरे वास्ते दुआ करें" { देओबंदी बुज़ुर्ग: मौलाना सय्यिद मुनाज़िर हसन गिलानी साहब "सवानेह क़ासमी" (जिल्द 2) सफ़ह 29} (मक्तबा रहमानिया लाहौर)

[دیوبندی بزرگ : مولانا سید مناظر احسن گیلانی صاحب " **سوانح قاسمی** " (جلد نمبر 2) صفحہ نمبر 29] ﴿ مکتبہ رحمانیہ لاہور ﴾

4 उलेमा का अक़ीदा मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब खुद लिखते है "मैं अपने हज़रत (देओबंदी और बरेल्वी उलेमा के मुश्तरका (common) रूहानी पेशवा शैख इम्दादुल्लाह मुहाज़िर मक्की साहब) की खिदमत में गिज़ाए-रूह का वह सबक जो हज़रत शाहनूर की शान में है, सुना रहा था, जब असर मज़ार शरीफ़ का बयान आया तो आप (शैख़ मुहाजिर मक्की साहब) ने फ़रमाया: मेरे हज़रत का एक जोलाहा मुरीद था। हज़रत के इन्तिक़ाल के बाद उनके मज़ार शरीफ़ पर अर्ज़ किया कि हज़रत मैं बहुत परेशान हूँ और रोटियों का मुहताज हूँ कुछ दस्तगीरी फ़रमाइये हुक्म हुआ कि तुमको हमारे मज़ार से दो आने या आधा आना रोज़ मिला करेगा। एक मर्तबा मैं मज़ार शरीफ़ की हाज़िरी को गया तो वही जोलाहा भी हाज़िर था। उसने कुल कैफ़ियत बयान करके कहा: मुझे हर रोज़ वज़ीफ़ा क़ब्र से मिला करता है इस वाकिए पर मौलाना थानवी साहब का तब्सिरा है। "यह मिन्जुम्ला करामात के हैं"
{ देओबंदी बुज़ुर्ग: मौलाना अशरफ अली थानवी साहब " इमदाद-उल-मुश्ताक़" (वाकिया न०290) सफ़्हा न०144} (बुक कॉर्नर झेलम)

[دیوبندی بزرگ : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب " **امداد المشتاق** " (واقعہ نمبر 290) صفحہ نمبر 144] ﴿ بک کارنر جہلم ﴾

5 उलेमा का अक़ीदा मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब, मौलाना कासिम नानोतवी साहब "बानी दारुल-उलूम देओबंद" के मुत्तालिक मौलाना हबीबुर्रहमान साहब से नकल करते है: कि देवबंद के दो उस्ताद: मौलाना अहमद हसन अमरोहवी साहब और मौलाना फ़ख़्रूल हसन गंगोहवी साहब के दरमियान बाहम तनाजा हुआ तो मौलाना महमूदुल हसन साहब असल झगड़े में शरीक ना होने के बावजूद इस मामले में आए, मगर गैरजानिबदार ना रह सके और किसी एक जानिब झुक गए इसी दौरान मौलाना रफ़ीउद्दीन साहब ने मौलाना महमूदुल हसन साहब को अपने हुजरे में बुलाया और कहा पहले ये मेरा रूई का लाबादा देख लो, सख़्त सर्दी का मौसम था इसके बावजूद मौलाना का लबादा ख़ूब तर था और भीग रहा था। फिर मौलाना रफ़ीउद्दीन साहब ने फ़रमाया वाक़िआ यह है कि अभी अभी मौलाना नानोत्वी साहब जस्दे-उन्सुरी के साथ मेरे पास तशरीफ लाए थे ,

4

जिस से मैं एक दम पसीना-पसीना हो गया और मेरा लबादा तरबतर हो गया और फ़रमाया कि महमूदुल हसन से कहो कि वह इस झगड़े में ना पड़े। इस पर मौलाना ने तौबा कर ली।" इस वाक़िए पर मौलाना अशरफ़ अली थानवी का तब्सिरा यह है "यह वाक़िया रुह का तमस्सुल था और इसकी दो सूरतें हो सकती हैं :एक यह कि जस्दे मिसाली था मगर मुशाबह जस्दे-उन्सुरी के। दूसरी सूरत यह कि रुह ने ख़ुद अनासिर में तसर्रुफ़ करके जस्दे उन्सुरी तैयार कर लिया हो मगर वक़्त गुज़र जाने पर फिर इस मुरक्कब को तहलील कर दिया जाता है।"

{ देओबंदी बुज़ुर्ग: मौलाना अशरफ अली थानवी साहब "अर्वाहा सलासा" (हिकायत न० 247) सफ़्हा न० 233} (मक्तबा रहमानिया लाहौर)

[دیوبندی بزرگ : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب " ارواح ثلاثہ " (حکایت نمبر 247) صفحہ نمبر 233] ﴾ مکتبہ رحمانیہ لاہور ﴿

6 उलेमा का अक़ीदा मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब मौलाना मुईनुद्दीन साहब से उनके वालिदे मोहतरम मौलाना मुहम्मद याक़ूब नानोत्वी साहब की वफ़ात के बाद उनकी करामते क़ब्र नक़ल करते हैं "एक मर्तबा हमारे "नानोत" में जाड़ा बुख़ार की बहुत कसरत हुई सो जो मौलाना की क़ब्र की मिट्टी ले जाकर बांध लेता उसे आराम हो जाता। बस इस कसरत से मिट्टी ले गए कि जब भी क़ब्र पे मिट्टी डालो मिट्टी ख़तम। कई मर्तबा डाल चुका। परेशान होकर एक दफ़ा मौलाना की क़ब्र पर जा कर कहा आप की तो करामत हो गई और हमारी मुसीबत हो गई। याद रखो ! अगर अब कि कोई अच्छा हुआ तो हम मिट्टी ना डालेंगे ऐसे ही पड़े रहियो। लोग जूते पहने तुम्हारे ऊपर ऐसे ही चलेंगे। बस उसी दिन से फिर किसी को आराम नहीं हुआ। फिर शोहरत हो गई कि अब क़ब्र से आराम नहीं होता फिर लोगों ने मिट्टी ले जाना बन्द कर दिया।" { देओबंदी बुज़ुर्ग: मौलाना अशरफ अली थानवी साहब "अर्वाहा सलासा" (हिकायत न० 366) सफ़्हा न० 302} (मक्तबा रहमानिया लाहौर)

[دیوبندی بزرگ : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب " ارواح ثلاثہ " (حکایت نمبر 366) صفحہ نمبر 302] ﴾ مکتبہ رحمانیہ لاہور ﴿

7 उलेमा का अक़ीदा तब्लीग़ी जमाअत के बुर्ज़ग मौलाना मुहम्मद ज़करिया सहारनपुरी साहब लिखते हैं "अरब की एक जमाअत एक मशहूर सख़ी तरीन की क़ब्र पर गई। दूर का सफ़र था। रात को वहाँ ठहरे। उनमें से एक ने उस क़ब्र वाले को ख़्वाब में देखा वह उस से कह रहा है कि तू अपने ऊँट को मेरे बख़्ती ऊँट के बदले में फ़रोख़्त करता है। ख़्वाब देखने वाले ने ख़्वाब में ही मामला तै कर लिया। वह साहिबे क़ब्र उठा और उस ऊँट को ज़िबह कर दिया। जब यह ऊँट वाला नींद से उठा तो उसके ऊँट से ख़ून जारी था। उसने उसको ज़िबह कर दिया और गोश्त को तक़्सीम कर दिया।"

{देओबंदी बुज़ुर्ग:मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब "फ़ज़ाईल-ए-सद्क़ात"(हिस्सा 2,सातवीं फसल वाकिया न०16 सफ़ह न०711}(क़ुतुबखाना फैजी लाहौर)

[دیوبندی بزرگ: مولانا محمد زکریا صاحب " فضائل صدقات " (حصہ دوم، ساتویں فصل، واقعہ نمبر 16) صفحہ نمبر 711] ﴾ کتب خانہ فیضی لاہور ﴿

8 उलेमा का अक़ीदा तब्लीग़ी जमाअत के सरपरस्त मौलाना मुहम्मद ज़करिया सहारनपूरी साहब ख़ुद लिखते हैं : "मिस्र में एक साहब ख़ैर शख़्स थे लोगों से एक ग़रीब के लिये ख़ैरात मांगी मगर किसी ने कुछ ना दिया। यह सब से मायूस होकर एक सख़ी क़ब्र पर चले गए और उसकी क़ब्र पर बैठ कर सारा किस्सा बयान कर दिया और वहाँ से उठ कर चले गए......रात को उन साहब ने क़ब्र वाले को ख़्वाब में देखा वह कह रहा था कि मैंने तुम्हारी सारी बात सुन ली थी मगर मुझे जवाब देने की इजाज़त ना हुई तुम मेरे घर वालों के पास जाओ और उनसे कहो कि मकान में फ़ला जगह से 500 अशरफ़ियाँ उस फ़कीर को दे दें.....

{देओबंदी बुज़ुर्ग: मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब "फ़ज़ाईल-ए-सद्क़ात"(हिस्सा 2,सातवीं फसल वाकिया न०24, सफ़ह न०716}(क़ुतुबखाना फैजी लाहौर)

[دیوبندی بزرگ: مولانا محمد زکریا صاحب " فضائل صدقات " (حصہ دوم، ساتویں فصل، واقعہ نمبر 24) صفحہ نمبر 716] ﴾ کتب خانہ فیضی لاہور ﴿